FOREST RESOURCES (वन संसाधन),

वन प्रकृति द्वारा दिया गया मूल्य या सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है। वन से हमें फल, फूल, सब्जी, सूखी पत्तियाँ, माँस, गोंद, रबड़ आदि प्राप्त होता है।

(i) वन के रहने से वर्षा अधिक होती है जिससे मृदा का कटाव नहीं हो पाता है।

(ii) वन के रहने से हमारे आस-पास का वातावरण स्वच्छ रहता है।

(iii) वन आँधी, तूफान एवम् रेतीले प्रवाह को रोकते हैं।

(iv) यह वायुमंडल के प्रदूषकों को तेजी से घटाकर उसे स्वच्छ रखते हैं जिससे सभी प्रकार के वन्य प्राणी सुरक्षित रहते हैं।

(v) वन वायुमंडल के नमी को बनाए रखता है और वर्षा में भी सहायक होते हैं।

(vi) वृक्षों की जड़ें न सिर्फ मृदा को उपजाऊ बनाए रखती हैं बल्कि उसे कटाव से भी रोकती हैं और जल स्तर को ऊँचा बनाए रखता है।

(vii) वन अनेक प्रकार के पशु-पक्षी व वन्य प्राणियों शरण के स्थान हैं। इन सबके लिए वनों में प्राणदायी शक्ति है।

(viii) वन से हमें कई प्रकार की औषधि, जड़ी-बूटी भी मिलते हैं।

Distribution of forests —

वनों का वितरण — मोटे तौर पर विश्व में निम्न पाँच प्रकार के प्राकृतिक वनस्पति के प्रदेश अथवा वन प्रदेश पाए जाते हैं।

(i) उष्ण कटिबंधीय सदाबहार के वन

(ii) उष्ण एवम् शीतोष्ण कटिबंधीय पतझड़ वाले या मानसूनी वन।

Scanned with CamScanner

(iii) शीतोष्ण कटिबंधीय झाड़ी वाले या शुष्क सदाबहार के वन इन्हें भू-मध्य सागरीय वन भी कहते हैं।

(iv) शीतोष्ण कटिबंधीय पतझड़ वाले वन, इसमें पूर्वी व पश्चिमी तटवर्ती दोनों प्रकार के वन आते हैं।

(v) शीतोष्ण कटिबंधीय कोणधारी या टैगा के वन।

(1) उष्ण कटिबंधीय सदाबहार के वन ⇒ इन्हें विषुवत रेखीय वन भी कहा जाता है इनका विस्तार विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा से 5° उत्तर से 5° दक्षिण तथा कहीं-कहीं 10 अक्षांशों तक पाया जाता है। इनका सबसे अधिक विस्तार अमेजन बेसिन मध्यवर्ती या विषुवतरेखीय अफ्रीका - (कांगो बेसिन एवम् गिनी की खाड़ी के तट) दक्षिण-पूर्वी एशिया और मध्य अमेरिका में पाया जाता है। यहाँ तापमान वर्ष भर 24° - 27°C के मध्य एवम् वर्षा 160 - 200cm. के मध्य प्रायः प्रतिदिन हो जाती है।

यहाँ के प्रमुख वन ⇒ यहाँ के मुख्य वन आबनूस, महोगिनी, एबोनी, सिनकोना, गटापार्चा, लाग्वुड, आयरन वुड, ब्राजील, वुड रबड़, मेनिऑप नारियल, ताड़, बेंत अनानास केला ग्रीनहार्ट, और ब्रेडफ्रुट है।

यहाँ रबड़ महोगिनी व एबोनी की लकड़ी सिनकोना से कुनैन एवम् अनेक फल व जड़ी-बूटी मिलती है।

(2) उष्ण व अर्द्धोष्ण कटिबंधीय पतझड़ वाले मानसूनी वन ⇒ उष्ण कटिबंधीय मानसूनी प्रदेशों

Scanned with CamScanner

में वनों का वितरण वर्षा की मात्रा पर निर्भर है क्योंकि इन प्रदेशों में वर्ष भर तापमान ऊँचे रहते हैं। जबकि वर्षा ग्रीष्मकाल में ही होती है जहाँ वर्षा 20cm. से अधिक होती है, वहाँ सघन वन पाए जाते हैं। 100-200cm. वर्षा वाले क्षेत्रों में मानसूनी खुले वन पाए जाते हैं। ऊँचे तापमान से बचने के लिए ग्रीष्मकाल से पहले पुराने पत्ते गिर जाते हैं और नवीन कोंपले आने से वाष्पीकरण कम होता है। इन वनों का विस्तार बर्मा थाइलैंड सम्पूर्ण भारतीय उपद्वीप दक्षिणी-पूर्वी चीन 25° उत्तरी अक्षांश तक दक्षिणी मैक्सिको व पूर्वी मध्य अमेरिका उत्तरी आस्ट्रेलिया एवम् पूर्वी अफ्रीका के देशों में पाया जाता है।

यहाँ के मुख्य वृक्ष => सागवान, साल, बाँस, ताड़, नारियल, केला आदि हैं। यह वन इमारती लकड़ी मजबूत व टिकाऊ लकड़ी अनेक प्रकार के फल एवम् जड़ी-बूटियों के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

(3) शीतोष्ण कटिबंधीय झाड़ी वाले सदाबहार वन => 30°-45° अक्षांशों के मध्य भूमध्य सागरीय जलवायु वाले प्रदेशों में ऐसे वन पाए जाते हैं। यहाँ पर ग्रीष्मकाल शुष्क एवं शीतकाल में वर्षा होने से ऐसे वनों के वृक्षों में जल संरक्षण या संग्रहण के विशेष गुण पाए जाते हैं। लम्बी जड़ चिकना तना रोएँदार या मोटी या चिकनी पत्तियाँ एवम् छोटा आकार इनकी खास विशेषताएँ हैं। इस प्रकार यह वन रसदार फल अंगूर एवम् सूखे

Scanned with CamScanner

मेवे के लिए विश्वविख्यात है।

(4) शीतोष्ण कटिबंधीय पतझड़ वाले वन ⇒
यह वन अधिकतर उत्तरी गोलार्द्ध के समशीतोष्ण जलवायु वाले प्रदेश में 40° - 60° अक्षांशों के मध्य पूर्वी एवम् पश्चिमी भागों की ओर पाए जाते हैं। इनके मध्य महाद्वीपीय भागों में घास के मैदान विस्तृत है। दोनों तटों की ओर वर्षा पर्याप्त होने एवम् तापमान सर्दियों में कम गिरने से यह वन फैले हैं। यह भी चौड़ी पत्ती वाले वन हैं। 60° के आस-पास इन्हें मिश्रित वन के नाम से भी पुकारते हैं क्योंकि इनमें ऊँचे अक्षांशों की ओर कोणधारी वृक्ष भी मिलते हैं। दक्षिणी गोलार्द्ध में यह 40° दक्षिण में दक्षिण अमेरिका (South America) के पश्चिमी तट एवम् पर्वतपदीय भागों पर पाए जाते हैं।

सर्दियों में कठोर ठंड पड़ने से यहाँ के वृक्षों की पत्तियाँ सर्दियों के प्रारंभ में झड़ जाती हैं जिससे वृक्ष बर्फ व हिम से रक्षा कर सके। यह वन खुले होते हैं। इन वनों की लकड़ी का अनेक प्रकार से उपयोग हो रहा है। यह इमारती लकड़ी लट्ठे चिप बोर्ड आदि बनाने में विशेष काम आती है। यहाँ की लकड़ी टिकाऊ व सुंदर होती है। इन प्रदेशों के मुख्य वृक्ष ओक, मैपिल, बीच, बर्च, हेमलॉक, पोपलर, चेस्टनट अखरोट आदि हैं।

(5) शीतशीतोष्ण कटिबंधीय या टैगा वन ⇒
यह वन उपध्रुवीय प्रदेशों में मुख्यतः उत्तरी गोलार्द्ध में प्रायः 55° - 70° उत्तर तक पाए

Scanned with CamScanner

जाते हैं। वैसे उत्तरी अमेरिका के पूर्वी भाग में लेब्रेडोर के पठार पर कठोर ठंडा पड़ने से वहाँ यह 45' तक पाए जाते हैं। विश्व के 85% देगा वन क्षेत्र एशिया, यूरोप एवम् उत्तरी अमेरिका के उपर्युक्त प्रदेशों में और मात्र 4% दक्षिणी अमेरिका 6% आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड में एवम् शेष कोणधारी वन संपूर्ण विश्व के ऊँचे पर्वतीय भागों में फैले हैं। इस प्रकार इन वनों का अधिकांश क्षेत्र उत्तरी गोलार्द्ध के उप आर्कटिक व शीत कटिबंध में पाया जाता है। यहाँ पर वर्ष भर ठंडा रहता है। सर्दियों में तापमान -40°C से भी नीचे चला जाता है। यहाँ के वन लुगदी बनाने, कागज बनाने, कृत्रिम रेशे, दियासलाई उद्योग में विशेष उपयोगी पाए जाते हैं। इन दुकानों का व्यवसायिक फर्नीचर भीतरी सजावट, चौखट पेटियाँ आदि सरलता से बनाई जाती हैं।

यहाँ के मुख्य वृक्ष सिल्वर फर, चीड़, लार्च सीडर आदि हैं। पश्चिमी उत्तरी अमेरिका का डगलसफर वृक्ष अपनी मोटाई एवम् ऊँचाई के लिए विशेष प्रसिद्ध रहा है।

वनों का उपयोग (Use of forests) :-
(i) खिड़की या अन्य किसी कार्य में वन का उपयोग करते हैं।
(ii) वनों का उपयोग लकड़ी को काटकर उद्योग धन्धा करते हैं।

वनों का ह्रास (Depletion of forests) :-
विश्व के विभिन्न भागों में वनों के

अन्तर्गत क्षेत्रफल में निरंतर कमी होती जा रही है। प्रारंभ में भूतल के लगभग 30% भाग में वन का विस्तार था लेकिन अब 15% भाग में ही वन का विस्तार है। इस वनों में धीरे-धीरे कमी आ रही है।

वनों के विनाश होने के निम्न कारण हैं—

(i) बढ़ती जनसंख्या

(ii) मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए वनों का लगातार कटना

(iii) भूभाग में स्थानान्तरित खेती होने के कारण वनों का ह्रास

(iv) पेड़-पौधों में कीड़े लग जाने के कारण पेड़-पौधों का सूखना।

Scanned with CamScanner

वनों एवम् वन्य प्राणियों का संरक्षण
(Conservation of forests & wild life) ⇒

वन एवम् वन्य प्राणी किसी देश की अमूल्य सम्पति है जिनका वातावरण संतुलन एवम् आर्थिक विकास से गहरा संबंध है। वनों के संरक्षण हेतु अब सभी देशों में अधिनियम बनाकर वृक्षों के काटने पर रोक लगाई है। वृक्षों को रोगों और कीड़ों से रोकथाम करने के लिए उन पर कीटाणुनाशक औषधियों को छिड़का जाता है जिससे हमारा पर्यावरण स्वच्छ रह सकेगा। अब विश्व के प्रायः सभी देशों की सरकारें वृक्षों के संरक्षण की ओर पर्याप्त ध्यान देने लगी है। केवल वयस्क वृक्षों (mature trees) को ही काटा जाता है। छोटे और मध्यम आयु वाले वृक्षों को पूरा होने तक बढ़ने दिया जाता है। विश्व के

Scanned with CamScanner

लगभग 100 से ऊपर देशों में वर्ष के किसी-न-किसी दिन अथवा सप्ताह में वृक्षारोपण उत्सव (Van mahotsava) मनाया जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका, फिलिपींस और कंबोडिया में इस दिन को (Arbor day), जापान में - Green week), इजराइल में - New years and days of trees), आइसलैंड में Student Afforestation day तथा मिस्र में - Van mahotsava कहते हैं।

वन्य जीवों का संरक्षण ⇒ वनों की भाँति वन में पाए जाने वाले विविध वन्य प्राणियों की सुरक्षा भी समान रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि वनों में पारिस्थितिकी संतुलन शाकाहारी एवम् मांसाहारी जीवों के मिलने से रहता है। वन्य प्राणियों से खाल-बाल, हाथी व गैंडा के दाँत, मोंस, खुर, चमड़ा व अन्य बहुमूल्य वस्तुएँ हमारे पर्यावरण से उपलब्ध हो जाते हैं। बिना वन प्राणियों के वन सम्पदा अधूरी है। इसी कारण विश्व के अधिकांश भागों के राष्ट्रीय पार्कों एवम् अभ्यारणों (National parks and Game Sanctuaries) में वृक्षों का काटना एवम् वन्य पशुओं को मारना दोनों पर ही समान रूप से रोक लगाई गई है। इसके साथ ही नष्ट होती हुई जीवों की जातियों को भी तेजी से सुरक्षा दी जानी चाहिए अन्यथा इसका बहुत बुरा प्रभाव हमारी सांस्कृतिक धरोहर एवम् जीवों के विकास क्रम पर

पड़ेगा। सौभाग्यवश अब इस ओर विशेष चेतना भी जागृत होने लगी है। प्रत्येक देश में राष्ट्रीय पक्षी के साथ-साथ अब वनों में शिकार मात्र इतिहास की बात बन गई है।

Scanned with CamScanner